YOGA EDUCATION FOR ENHANCING QUALITY IN TEACHER EDUCATION

An Anthology of Selected Paper Presented at the International Seminar

Sponsored by

INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH (ICSSR)

Chief Editor

Dr. Ranveer Pratap Asija

M.Sc.(Hons.), M.A., M.Ed., M.B.A., Ph.D. (Edu.)
Principal
Maharishi Dayanand College of Education
Abohar (Pb.)–152116

Editor

Dr. Anurag Asija

M.A., M.Ed., LL.B., M.Phil., Ph.D. (Edu.)
Assistant Professor
Maharishi Dayanand College of Education
Abohar (Pb.)–152116

MAHARISHI DAYANAND COLLEGE OF EDUCATION
ABOHAR

(A NAAC Accredited Institution, Affiliated to Panjab University, Chandigarh)

RECOMMENDATION OF 'YOGA-SCIENCE' IN THE ERADICATION OF INTOXICANT-ADDICTION' — 80–82
—Ekta Sharma

YOGA EDUCATION FOR MANAGMENT OF STRESS — 83–85
—Smriti Sharma

[illegible]द्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रम में योग शिक्षा — 86–87
—डॉ रीतु बाला

योग शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास — 88–90
—[illegible] सिंह

योग शिक्षा द्वारा बच्चों में सृजनात्मकता का विकास — 91–94
—श्रीमती निर्मला भास्कर

[illegible] परिप्रेक्ष्य में योग शिक्षा का महत्व — 95–97
—डॉ [illegible] भास्कर

[illegible] शिक्षा एवं योग — 98–101
—[illegible] वेदवान

YOGA, WOMEN AND CONTEMPORARY LIFESTYLE : A STUDY — 102–106
—[illegible] Purohit

योग शिक्षा एवं नैतिक मूल्य — 107–109
—डॉ [illegible]

[illegible]द्भगवद्गीता में योग शिक्षा द्वारा तनाव प्रबंधन — 110–113
—डॉ [illegible] गुर्वेन्द्र एवं डॉ. गायत्री गुर्वेन्द्र

YOGA EDUCATION FOR BETTER ORGANIZATIONAL [illegible] IN EDUCATION — 114–116
—[illegible] Kaur

[illegible] YOGA IN EDUCATION — 117–121
—[illegible] & Mr. Deepak Kumar

[illegible] STRESS FREE LIFE — 122–124
—[illegible]

[illegible] — 125–127
—[illegible]

29

योग शिक्षा द्वारा बच्चों में सृजनात्मकता का विकास

श्रीमती निर्मला भास्कर*

मानव स्वभाव से ही नवीन खोज करता रहता है अर्थात् खोजना उसकी प्रवृत्ति है परन्तु किसी भी प्रकार की खोज या कार्य में व्यक्ति अपनी योग्यताओं व क्षमताओं का उपयोग करता है। मानव अपनी क्षमताओं के आधार पर ही विकास करता रहता है। मानवीय क्षमताओं में से कुछ क्षमताएं सामान्य होती हो और कुछ विशिष्ट। क्षमताएं उसके मनोशरीर के आंतरिक कार्य हो और प्रायः ये क्षमताएं एक–दूसरे से गुथी हुई होती है। ये क्षमताएं एक तरह से व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक उपकरण या औजार है जो उसकी क्रियाओं और को परिष्कृत करते है।

क्षमताएं है–इच्छा शक्ति, कल्पना शक्ति, चिंतन शक्ति, अनुभव, अन्तर्ज्ञान शक्ति, संवेदना, मेधाशक्ति या शक्ति और सृजनातमकता की शक्ति। शिक्षा और सृजनात्मकता के मध्य गहरा सम्बन्ध है और यह बात है कि सृजनात्मकता में वृद्धि आज के संसार में शिक्षा के उद्देश्यों में एक उदेष्य है। इसी कारण शिक्षा–शास्त्री और मनोवैज्ञानिक सृजनात्मक सोच की समस्याओं को हल करने में लगे रहते हैं। पहले यह माना जाता था कि सृजनात्मकता परमात्मा की देन है परन्तु अब यह सच्चाई सामने आई है कि यह व्यक्ति की बुनियादी योग्यता है जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर मौजूद रहती है। प्रत्येक बालक में नये विचार उत्पन्न करने की योग्यता है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ सीमा तक सृजनात्मिकता की योग्यता अवष्य पाई जाती है।

मानवीय क्रियात्मिकता के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनात्मक व्यक्ति अवष्य पाये जाते हैं। एक सृजनात्मक है, सृजनात्मक इमारतकार हैं, सृजनात्मक वैज्ञानिक हैं, सृजनात्मक लेखक, सृजनात्मिक व्यापारी, सृजनात्मक अध्यापक और सृजनात्मक विद्यार्थी आदि। वह सृजनात्मक हैं, क्योंकि उनके अनदर कला है। सृजनात्मक व्यक्ति कोई विभिन्न कार्य नहीं करते बल्कि प्रत्येक कार्य को अलग ढंग से करते हैं।

के अनुसार "सृजनात्मकता उन योग्यताओं की ओर संकेत करती है, जो सृजनात्मक व्यक्ति का सकता है। सृजनात्मक व्यवहार सदैव नया और खोजने वाला होता है। इस प्रकार सृजनात्मकता व्यक्ति योग्यताएँ हैं, जो कि व्यक्ति की सृजनात्मक प्रकृति का परिणाम निकालती हैं।

के अनुसार "सृजनात्मकता व्यक्ति की रचना, वस्तु या विचार उत्पन्न करने की योग्यता है, जो ही नये होते हैं और उत्पादनकर्त्ता उतना पहले नहीं जानता होता।"

---

* प्रशिक्षिका, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.)